www.pediatric-rheumathology.printo.it

दवा सम्बन्धी जानकारी

एन0एस0ए0आई0डी0

ये दर्द, सूजन और बुखार कम करने वाली दवाई है। यह बीमारी को नहीं रोकती, बस मरीज को आराम देती है। ये एक एन्जाइम साइक्लोओक्सिजनेज को रोकती है जो उन पदार्थ को बनाने में सहायक है जिनसे सूजन व प्रज्वलन होता है। दूसरी ओर यह पदार्थ {प्रोस्टागलैडिन} शरीर में पेट की देखभाल, गुर्दे में खून की मात्रा को नियंत्रित करते हैं। इन्हीं के कमी के कारण एन एस आई डी के दुष्प्रभाव होते हैं-

पेट में खराबी सबसे अधिक पाया जाने वाला बुरा असर है जो पेट की परत में चोट के कारण होता है। लक्षण हल्के पेट दर्द से लेकर गंभीर पेट दर्द, पेट से खून का रिसना जिससे काली और पतली टट्टी होती है।

बच्चों में यह दुष्प्रभाव बडों के मुकाबले कम होते हैं फिर भी इन दवाइयों को भोजन के साथ लेना चाहिये। एस्प्रिन नामक दवा से जिगर पर असर हो सकता है। गुर्दे पर प्रभाव सिर्फ उन्हीं बच्चों में होता है जिनके दिल, जिगर या गुर्दे में पहले से ही कोई बीमारी हो। इन दवाइयों से रक्त स्राव की परेशानी भी हो सकती है, मगर उन्हीं बच्चों में जिनमें पहले से यह परेशानी हो। यह दुष्प्रभाव खासकर 'एस्प्रिन' से होता है अतः इसे उन बीमारियों में देते हैं जिनमें खून के थक्के जमने की परेशानी हो। अतः इन बीमारियों में कम मात्रा में एस्प्रिन देना बहुत कारगर होता है।

बहुत सारी एन0एस0ए0आई0डी0 बाजार में उपलब्ध हैं। नेप्रोक्सिन, आईब्यूप्रोफेन प्रायःइस्तेमाल में आती हैं एस्प्रिन वैसे तो सस्ती और अच्छी दवा है लेकिन दुष्प्रभावों की वजह से कम प्रयोग में आती है। इस वर्ग की दवाइयां हर बच्चे में अलग-अलग असर करती है अर्थात कोई दवा किसी बच्चे को असर करती है और कोई दूसरी दवा दूसरे बच्चे को।

हाल ही में एक नये वर्ग का एन0एस0ए0आई0डी0 बाजार में आया है जो काक्स-2 नामक एंजाइम को रोकता है। इसके पेट पर दुष्प्रभाव कम होते हैं। इस वर्ग में सिलीकाक्सेब और रोफीकाक्सेब नामक दवाइयां आती हैं जो बाकी एन0एस0ए0आई0डी0 से ज्यादा मंहगी है। इन दवाओं का बच्चों पर प्रभाव के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।

साइक्लोसपोरिन ए

यह एक प्रतिरक्षा प्रणाली को घटाने वाली दवा है जो शुरू में अंग प्रत्यारोपण के बाद दी जाती थी। यह खून के उन सफेद कणों पर काम करती है जो प्रतिरक्षा सम्बन्धी कार्य में भाग लेते हैं। यह दवा खाने की गोली या पीने की दवा के रूप में ली जा सकती है। इसके दुष्प्रभाव बहुत हैं खासकर ज्यादा मात्रा में लेने से। इनमें हैं - गुर्दे पर प्रभाव, रक्तचाप में बढत, जिगर पर प्रभाव, मसूढों का बढना, शरीर पर बाल का बढना और उल्टी आना। अतः इस दवा से इलाज के वक्त समय-समय पर जॉच कराते रहना चाहिये।

इन्ट्रावीनस इम्यूनोग्लोबुलिन्स
एंटीबाडी को ही इम्यूनोग्लोबुलिन्स कहते हैं। नस में दिये जाने वाला इम्यूनोग्लोबुलिन्स {आई वी आई जी} को अनेक स्वस्थ रक्त दान करने वाले लोगों के प्लास्मा से बनाया जाता है। यह प्लास्मा खून का पानी वाला भाग होता है। आई वी आई जी उन बच्चों के इलाज में काम आता है जिनसे प्रतिरक्षा प्रणाली में खराबी के कारण एंटीबाडी नहीं होती है। आई वी आई जी आटोइम्यून व संधिवातीय रोगों में भी लाभदायक पाया गया है किन्तु इसमें वह कैसे कार्य करता हैं यह पूरी तरह से ज्ञात नहीं है। इस दवा को नस में दिया जाता हैं इसके दुष्प्रभाव असामान्य हैं - एलर्जी, मांसपेशियों में दर्द, बुखार और सर दर्द {नस में दवा देते वक्त}, सर दर्द और उल्टी {दवा लेने के लगभग 24 घंटे बाद जो अपने आप ठीक हो जाता है}। यह दवा 'एच0आई0वी0' और 'हेपटाइटिस' जैसे संक्रमणों से मुक्त है।

कार्टिकोस्टेरायड
इस ग्रुप में वह दवाइयां आती हैं जो हमारा शरीर खुद उत्पन्न करता है। ये या इसी तरह की दवाइयों का उत्पादन किया जा सकता है और उन्हें कई बीमारियों के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है। आपके बच्चे को दी जाने वाली स्टेरायड उस स्टेरायड से अलग है जो सामान्यतः खिलाडी इस्तेमाल में लाते हैं।

कार्टिकोस्टेरायड एक बहुत ही कारगर और जल्दी असर करने वाली दवा है जो शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को कम करते हुये सूजन को कम करती है। इसके अलावा यह दवा शरीर की बाकी प्रणालियों पर भी असर करती है जैसे - रक्तचाप, शरीर के अन्दर पानी और नमक का परिवहन अथवा दिल से सम्बन्धित प्रणालियां।

इस दवा के कई दुष्प्रभाव भी होते हैं {खासकर लंबे इलाज के वक्त} अतःयह जरूरी है कि बच्चे का इलाज एक ऐसे डाक्टर के हाथों से हो, जो इस दवा के दुष्प्रभावों को कम करने में पूरी तरह समर्थ हो।

दवा की मात्रा/देने का तरीका
यह दवा मुंह से खायी जा सकती है, नस में दी जा सकती है अथवा जोडों के अन्दर या त्वचा पर लगायी जा सकती है। दवा की मात्रा और देने का तरीका बीमारी पर और मरीज की हालत पर निर्भर करता है। अधिक मात्रा खासकर जब इंजेक्शन से दी जाय तो ज्यादा और जल्दी असर करती है।

खाने की गोली अलग-अलग रूप में बाजार में उपलब्ध है। 'प्रेडनीसोन' सबसे ज्यादा प्रयोग में आती है।

दिन में एक बार {सुबह के वक्त} या दो दिन में एक बार दवा लेने से दुष्प्रभाव कम होते है, लेकिन इनसे असर भी इन दवाओं से कम होता है जो दिन में कई बार ली जाती है।

बीमारी ज्यादा होने पर डाक्टर ज्यादा मात्रा की 'मिथाइल प्रेडनीसोन' इस्तेमाल में लाता है जो दिन में एक बार कई दिनों तक नस में लगायी जाती है। अगर खाने की गोली से आराम न आये तो कम मात्रा में यह दवा हर रोज नसों में भी लगायी जा सकती है।

जोडों की बीमारी में लंबी असर करने वाली दवा को सीधे जोड में लगाया जाता है {डीपोट स्टेरायड}। 'डीपोट स्टेरायड में 'ट्रायमसिनोलोन एसीटोनायड या 'हेक्सएसीटोनायड' दी जाती है जो सूजन को कम करने में लम्बे समय तक असर करती है। इस दवा का असर अधिकतर मरीजों में कुंछ हफ्तों से कुछ महीनों तक रहता है। स्टेरायड के साथ दूसरी दवायें भी देने से एक या एक से ज्यादा जोडों का इलाज एक बार में किया जा सकता है।

दुष्प्रभाव

इससे दो तरह के दुष्प्रभाव होते हैं - एक तो ज्यादा मात्रा में लंबे इलाज की वजह से और दूसरा इलाज रोकने की वजह से। स्टेरायड को अगर एक महीने से जयादा समय तक लिया जा रहा है तो उसे एकदम से रोकने से कई दुष्प्रभाव हो सकते हैं इसका कारण है शरीर का अपने खुद के स्टेरायड बनाने की क्षमता में कमी।

दवा का असर और उसके दुष्प्रभाव हर मरीज में अलग होते है। अगर उसी दवा का बराबर-बराबर हिस्सों में बांटकर दिन में कई बार दिया जाये तो उस दवा के मुकाबले ज्यादा दुष्प्रभाव होता है जो दिन में एक बार दी जाती है।

दुष्प्रभाव है - ज्यादा भूख लगना जिससे वजन बढ जाता है और त्वचा में खिंचाव के निशान पड जाते है। अतः भोजन में तले पदार्थों और शक्कर की मात्रा कम कर देनी चाहिये और रेशेदार पदार्थों की मात्रा बढा देनी चाहिये।

चेहरे पर होने वाले मुंहासों को मलहम लगाकर ठीक किया जा सकता है। इस दवा से नींद की परेशानी अथवा मूड की भी परेशानी हो सकती है। लम्बे इलाज से लम्बाई पर भी असर हो सकता है। संक्रमणों में 'चिकन पोक्स' {बडी माता} प्रमुख है। इसके लिये एन्टीबाडी या एन्टीवायरल दवा दी जा सकती है।

कुछ अप्रत्यक्ष दुष्प्रभाव हैं - हड्डियों का कमजोर होना {आस्टियोपोरोसिस}, जो बाद में टूट भी सकती है। 'आस्टियोपोरोसिस' को पहचानने के लिये 'बोन डेनसिटोमेट्री' का प्रयोग किया जाता है।लगभग एक ग्राम कैल्शियम रोज और विटामिन-डी देने से 'आस्टियोपोरोसिस' को कम किया जा सकता है। आँख के दुष्प्रभाव हैं - मोतियाबिन्द और ग्लैकोमा'।

अगर रक्त चाप बढ जाय तो खाने में नमक कम कर देना चाहिये। रक्त में शक्कर की मात्रा बढने से 'डायबटीज' हो सकता है अतः भोजन में शक्कर और तैलीय पदार्थ कम कर देना चाहिये।

अजाथायोप्रिन

यह एक ऐसी दवा है जो प्रतिरक्षा प्रणाली को कम करती है। यह डी0एन0ए0 के उत्पादन को कम करती है जिससे कोशिकायें खुद को बढा नहीं पाती। यह दवा 'लिम्फोसाइट' नामक कोशिका पर असर करती है। यह दवा मुँह से ली जाती है।

इसके दुष्प्रभाव हैं - मुँह में छाले, उल्टी आना पतली टट्टी, पेट में दर्द, जो सामान्यतः कम लोगों में पाये जाते है। जिगर पर असर भी एक असामान्य दुष्प्रभाव है। इस दवा से खून में पाये जाने वाले सफेद कणों में कमी हो सकती हैं {ल्यूकोपीनिया}। कभी-कभी खून में पाये जाने वाले लाल कणों और 'प्लेटलेट' में भी कमी हो सकती है। इस दवा

के लम्बे इलाज से कैंसर की संभावना बढ सकती है मगर इस तथ्य के बारे में पूर्ण रूप से अथवा पक्के तौर से जानकारी नहीं है। इस दवा के सेवन से संक्रमण की संभावना बढ जाती है, खासकर -'हरपीज जोस्टर'।

साइक्लाफास्फेमाइड
यह एक प्रतिरक्षा प्रणाली को कम करने वाली दवा है जो सूजन को कम करती है। यह दवा कोछ्दिकओं की बढत में रूकावट डालती है क्योंकि डी0एन0ए0 ठीक से बन नहीं पाता। अतः ये उन कोछ्दिकाओं पर असर करती है जिन्हें बढने के लिये डी0एन0ए0 की जरूरत पडती है जैसे खून के कण, बाल और भोजन की नली में पाये जाने वाले कण। सबसे ज्यादा असर रक्त के सफेद कणों {लिम्फोसाइट} पर होता है। उनकी कार्यक्षमता व नम्बर कम होने से प्रतिरक्षा प्रणाली में कमी आती है। इस दवा को कैंसर के इलाज में प्रयोग के लिये बनाया था। संधिवात रोग में नसों में ज्यादा मात्रा में दवा महीने में एक बार दी जाती है तो इसके कैंसर के मरीजों के विरूद्ध कम दुष्प्रभाव होते हैं। यह दवा मुँह से या नस से दी जाती हैं नसों में दवा ज्यादा मात्रा में चार-चार हफ्तों पर दी जाती है। साइक्लोफोसफामाइड प्रतिरक्षा प्रणाली को बहुत कम कर देती है और उसके कई दुष्परिणाम होते हैं। इसलिये लगातार खून की जाँच करते रहना चाहिये। सबसे प्रायः दुष्प्रभाव है जी मिचलाना और उल्टी आना।

बाल झड सकते हैं। रक्त के सफेद कणों में और 'प्लेटलेट' में अत्यन्त कमी आ सकती है जिससे दवा बंद या कम करनी पड सकती है। पेछ्ाब में खून आ सकता है लेकिन यह दवा को रोजाना लेने से ज्यादा होता है। अतः इलाज के वक्त खूब पानी पीना चाहिये। लम्बे इलाज से बाँझपन की और कैंसर की संभावना बढ जाती है। इस दवा से संक्रमण की आछ्ंका भी बढ जाती है खासकर जब इसे 'स्टेरायड' जैसी प्रतिरक्षा प्रणाली को कम करने वाली दवा के साथ लिया जाये।

मेथोट्रेक्सेट
मेथोट्रेक्सेट एक ऐसी दवा है जो बच्चों में अलग-अलग बीमारियों में कई सालों से इस्तेमाल में लायी जा रही हैं पहले इसे कैंसर में प्रयोग किया जाता था क्योंकि यह कोछ्दिका की वृद्धि को रोकती है। कम मात्रा में देने से यह दवा सूजन को रोकती है। इस वजह से इसे जोडों की बीमारियों में प्रयोग में लाया जाता है। कम मात्रा में देने से दुष्प्रभाव भी कम होते है और उनकी रोंकथाम भी की जा सकती है।

यह दवा बाजार में दो रूपों में उपलब्ध है - खाने की गोली और इंजेक्छ्ान। यह हफ्ते में सिर्फ एक बार दी जाती है और हर हफ्ते उसी दिन दी जाती है। मरीज की बीमारी को ध्यान में रखते हुये डाक्टर यह निर्णय लेता है कि दवा की मात्रा कितनी हो और उसे किस रूप में दी जाये। खाने की गोली का असर ज्यादा होता है जब उसे भोजन के पहले पानी के साथ लिया जाये। इंजेक्छ्ान को ठीक त्वचा के नीचे दिया जा सकता है अथवा उसे मांसपेछ्ाी या नस में भी दिया जा सकता हैं। इंजेक्छ्ान से दवा का असर ज्यादा होता है और पेट पर दुष्प्रभाव कम। यह दवा लम्बे दौरान चलती है। बीमारी खत्म होने के 6 से 12 महीने तक इसको लेना चाहिये। अधिकतर बच्चों में इस दवा के बहुत कम दुष्परिणाम होते हैं।

इसके दुष्प्रभाव हैं जी मिचलाना, पेट में गडबडी। इन्हें कम करने के लिये दवा को रात में सोने से पहले लेना चाहिये। साथ में 'फोलिक एसिड' नामक विटामिन देने से दुष्प्रभाव

कम होते है। कभी-कभी मेथोट्रेक्सेट गोली लेने के पहले और बाद में, उल्टी की दवा का सेवन करने से या इन्जेक्शन से दवा लेने से यह दुष्परिणाम कम होते हैं।

इसके दूसरे दुष्प्रभाव हैं - मुंह में छाले और त्वचा में चकत्ते। कुछ बच्चों में खांसी और सांस की परेशानी हो सकती है {बहुत कम बच्चों में}। रक्त की कोशिकाओं पर प्रभाव बहुत कम होता है। बहुत ही कम बच्चों में जिगर पर प्रभाव हो सकता है। इसलिये जब जिगर के एंजाइम बहुत बढ जाते है तब यह दवा कुछ समय के लिये रोंक दी जाती है। अतः इस दवा को लेते वक्त समय-समय पर खून की जांच कराते रहना चाहिये।

इस इलाज के वक्त बच्चों में संक्रमण की संभावना तो नहीं बढती है पर उसकी गंभीरता बढ सकती है। इसमें चिकन पाक्स {बडी माता} प्रमुख हैं। अगर मेथोट्रेक्सेट से इलाज के वक्त आपके बच्चे को चिकन पाक्स हो जाये तो डाक्टर को जरूर दिखायें क्योंकि उसके लिये विशेष दवा की जरूरत होती है। यदि आपको यह ध्यान नहीं है कि आपके बच्चे को मेथोट्रेक्सेट शुरू करने से पहले चिकन पाक्स हुई है तो यह एक खून जॉच से पता किया जा सकता है।

यदि आपका बच्चा किशोरावस्था में है तो अन्य चीजों पर ध्यान रखना जरूरी है। इस इलाज के वक्त मदिरा का सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे जिगर पर दुष्प्रभाव पड सकता है। मेथोट्रेक्सेट अजन्में बच्चे पर भी दुष्प्रभाव डाल सकती है। अतः इस इलाज के वक्त परिवार नियोजन करना जरूरी है।

हाइड्रोक्सिक्लोरोक्विन

यह दवा शुरू में मलेरिया के इलाज के लिये इस्तेमाल की जाती थी। यह सूजन संबधी कई प्रणालियों को रोंकती है। यह दिन में एक बार दी जाने वाली खाने की गोली है। इसके दुष्प्रभाव कम हैं। मरीज को जी मिचलाने की शिकायत हो सकती है। इस दवा से आँख पर दुष्प्रभाव होता है। यह आँख के पर्दे पर जमा हो जाती है और दवा के बंद होने के बाद भी लम्बे समय तक वहीं जमा रहती है। इससे अंधापन हो सकता हैं मगर दवा को कम मात्रा में देने से यह दुष्प्रभाव असामान्य है। यह दुष्प्रभाव अगर जल्दी पकड में आ जाये तो अंधापन रोंका जा सकता है {अगर दवा को बंद कर दिया जाये}। अतः इस इलाज के वक्त समय-समय पर आँख की जॉच कराते रहना चाहिये, मगर चूँकि जोडों की बीमारी में इस दवा को कम मात्रा में दिया जाता है इसलिये यह दुष्प्रभाव असामान्य है।

सल्फासेलाजीन

यह एक सूजन को कम करने वाली और संक्रमण को रोकने वाली दवा हैं। यह उस वक्त बनाई गई थी जब जोडों की बीमारी को सांक्रमणिक माना जाता था। इसके बावजूद यह कुछ तरह की जोडों की बीमारी में कारगर है और खासकर उनमें जिनमें ऑत में संक्रमण होता है। यह दवा मुँह से ली जाती हैं। इसके दुष्प्रभावों की वजह से समय-समय पर खून की जॉच करानी चाहिये।

इसके दुष्प्रभाव हैं - भूख न लगना, उल्टी आना, पतली टट्टी, त्वचा पर चकत्ते, जिगर पर प्रभाव, खून की कोशिकाओं में कमी और प्रतिरक्षा प्रणाली को बढाने वाली कोशिकाओं अर्थात 'इम्यूनोग्लोब्युलिन' में कमी। इस दवा को सिस्टेमिक जेआईए और सिस्टेमिक ल्यूपस की बीमारी में नहीं देना चाहिये क्योंकि यह इस बीमारी को बढा सकती हैं।

कोल्चीसिन

कोल्चीसिन सदियों पुरानी दवा है। यह दवा 'कोल्छ्ीकम' नामक पौधे के सूखे हुये बीजों से बनाई जाती है। यह खून में मौजूद सफेद कणों को रोंकती है जिससे सूजन कम होती है। इसे मुँह से दिया जाता है। इसके दुष्प्रभाव हैं - पतली टट्टी, उल्टी आना और पेट में दर्द। उनके होने पर दवा की मात्रा कुछ समय के लिये कम कर देनी चाहिये। इन दुष्प्रभावों के चले जाने के बाद दवा की मात्रा धीरे-धीरे बढानी चाहिये। समय-समय पर खून की जॉच भी कराते रहना चाहिये क्योंकि यह रक्त कोष्ठिकाओं को कम करती है। जिन मरीजों को जिगर या गुर्दे की परेछ्ानी होती है उनमें मांसपेछ्ियों में कमजोरी आ सकती हैं तब दवा को रोंक देना चाहिये। तंत्रिका पर प्रभाव एक असामान्य दुष्प्रभाव है जिसकी वजह से दवा का असर धीरे हो सकता है।

कभी-कभी त्वचा पर चकत्ते या गंजापन भी हो सकता है। दवा को ज्यादा मात्रा लेने से गंभीर दुष्प्रभाव हो सकते हैं। इसके लिये चिकित्सक को दिखाना चाहिये। अधिकतर मरीज तो ठीक हो जाते हैं मगर कभी-कभी यह जानलेवा भी हो जाता है। अतः इस दवा को बच्चों की पहुँच से दूर रखना चाहिये।

'फेमिलियल मेडिटरेनियन फीवर' में इस दवा को गर्भावस्था में जारी रखना चाहिये। अगर बच्चे पर असर करने वाले कुछ और कारण भी हों तो 3 या 4 महीने के गर्भ के समय 'एम्नियोसेन्टेसिस' अर्थात गर्भवती महिला के पेट से पानी निकालकर जॉच कर लेनी चाहिये।

एन्टी-टी0एन0एफ0 दवा

टी0एन0एफ0 एक ऐसा पदार्थ है जो सूजन के वक्त प्रमुख काम करता है। अतःबाजार में इस पदार्थ को रोकने वाली दवायें उपलब्ध हैं जैसे -'इनफ्लिक्सिमैब' 'अडालीम्यूबैब' और 'ईटानरसेप्ट'। ईटानरसेप्ट' को त्वचा में इंजेक्छ्ान के रूप में दिया जाता है। इसके देने का तरीका मरीज के परिवार वालों को सिखाया जा सकता है। इंजेक्छ्ान की जगह पर त्वचा में लाल दाग, खुजली या सूजन आ सकती है।

इनफ्लिक्सिमैब को अस्पताल में नसों में दिया जाता हैं। इंजेक्छ्ान के वक्त एलर्जी हो सकती है जिसके लक्षण हैं - सांस फूलना लाल चकत्ते, खुजली या रक्तचाप में कमी। यह एलर्जी पहले इंजेक्छ्ान के वक्त ज्यादा होती है। तब दवा को रोंक देना चाहिये। यह एलर्जी दवा के उस पदार्थ की वजह से होती है जो चूहे में बनाया जाता है। अडालिम्युबैब इनफ्लिक्सिमैब की तरह ही है बस उसमें चूहे वाला पदार्थ नहीं होता। इसे त्वचा में इंजेक्छ्ान के रूप में दिया जाता है।

इनके दुष्प्रभाव हैं - संक्रमण की आछ्ंका, खासकर टी0बी0। गंभीर दुष्प्रभाव में दवा को रोंक देना चाहिये। इस दवा से {जोडों की बीमारी के अलावा} प्रतिरक्षा प्रणाली को कम करने वाली कोई दूसरी बीमारी हो सकती है।

चूँकि यह दवा नई है अतः इसके दुष्प्रभावों के बारे में ठीक से ज्ञात नहीं है। इन दवाओं को 'बायोलाजिकल' कहते हैं क्योंकि इनका उत्पादन बायोटेक्नोलोजी की मदद से होता है। कुछ और दवायें जैसे आईएल1आरए6 एन्टीबाडी भी जोडों की बीमारी में प्रयोग की जाती हैं।

यह सभी बायोजोलिकल दवायें बहुत मंहगी है।